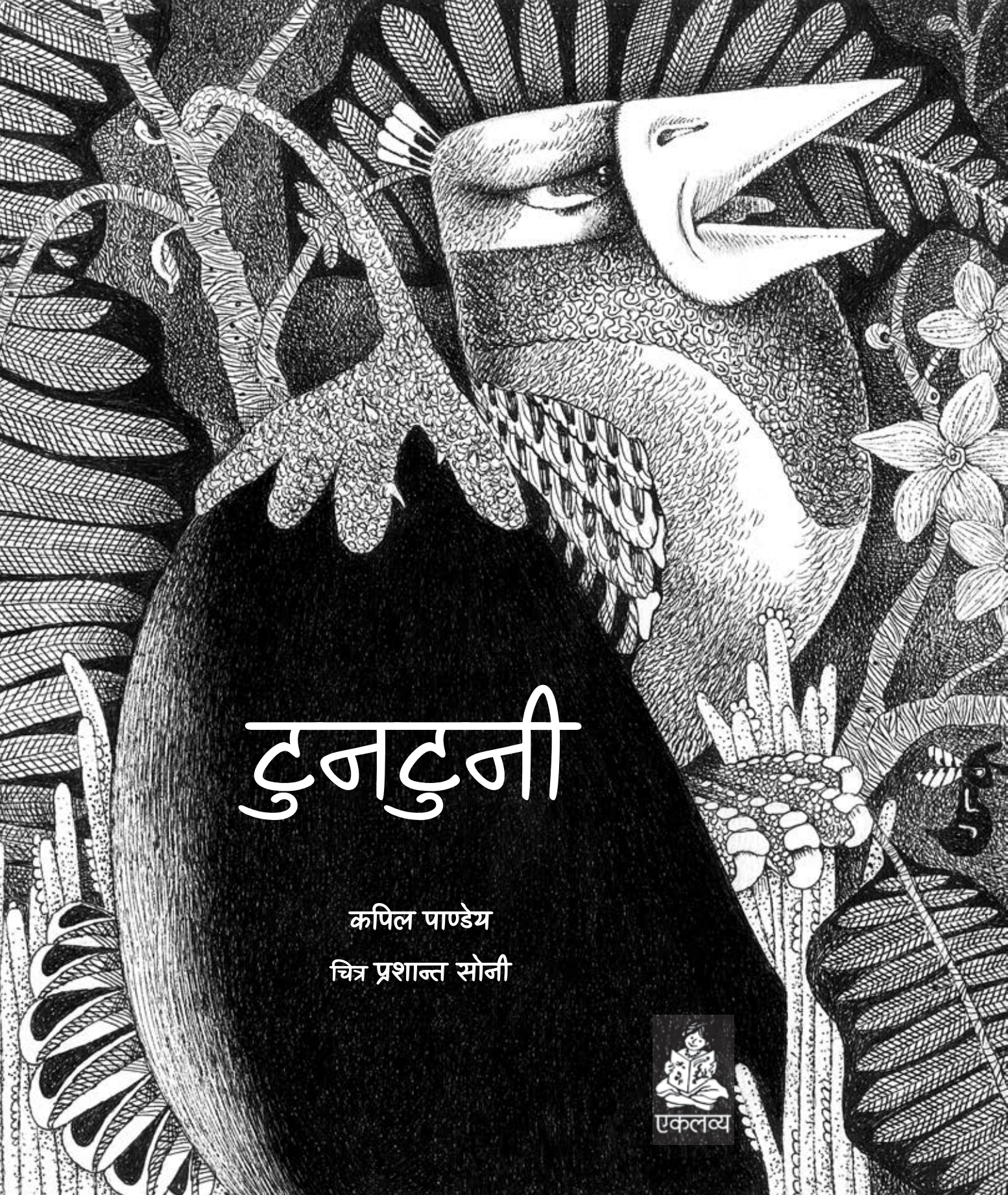

टुनटुनी

कपिल पाण्डेय

चित्र प्रशान्त सोनी

एकलव्य

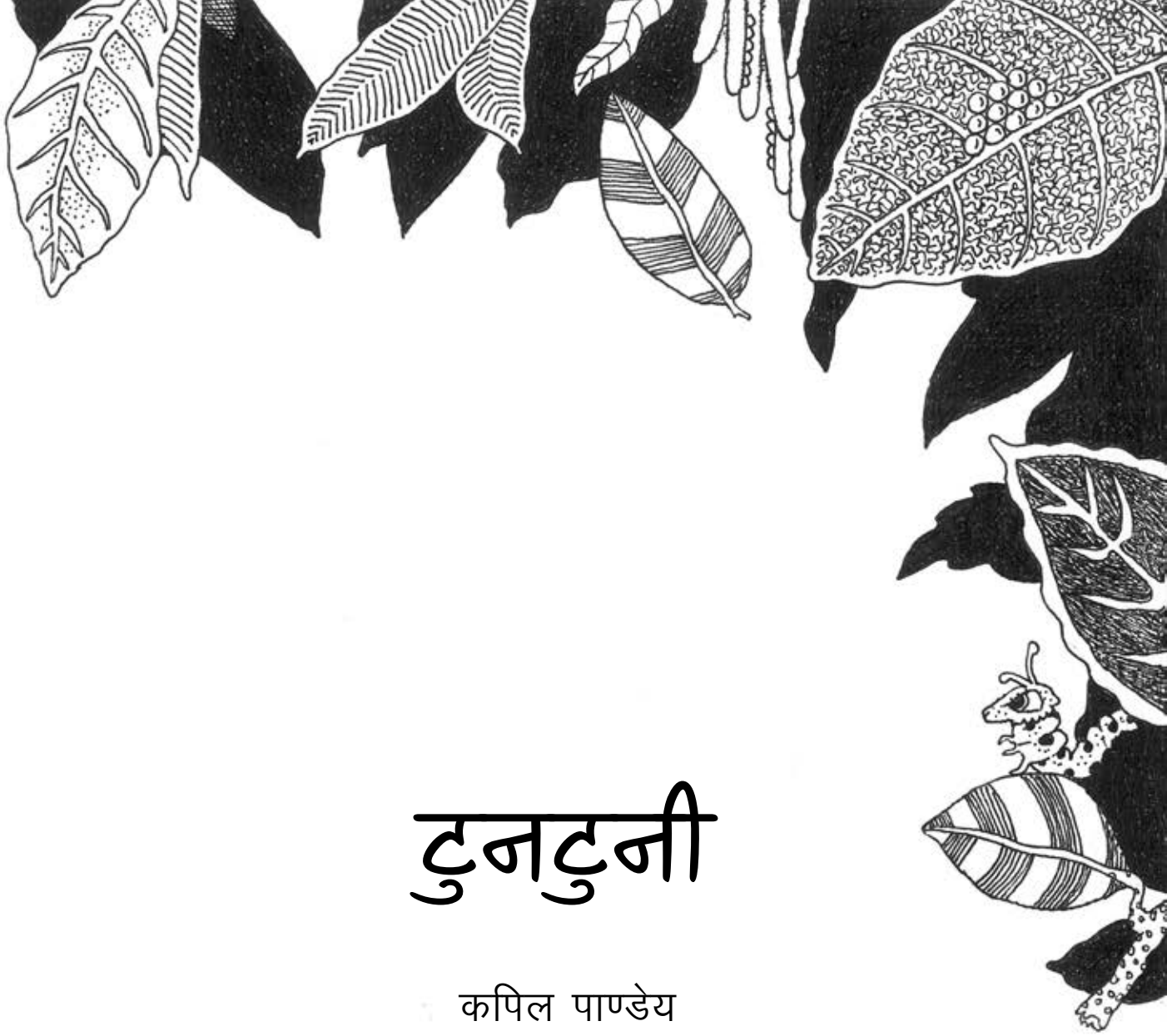

टुनटुनी

कपिल पाण्डेय

चित्र प्रशान्त सोनी

एकलव्य

कई साल पहले की बात है। एक बड़े-से देश के बड़े-से राज्य के बड़े-से किले के बड़े-से महल के बड़े-से दरबार के बड़े-से सिंहासन पर एक बड़ा-सा राजा बैठा करता था।

इस बड़े-से राजा के बड़े-से महल के नज़दीक एक छोटा-सा खेत था। और इस छोटे-से खेत के छोटे-से बैंगन के झाड़ की छोटी-सी टहनी पर एक छोटी-सी चिड़िया रहती थी – टुनटुनी।

टुनटुनी को नाचने-गाने का बेहद शौक था...

एक दिन नाचते-नाचते टुनटुनी के बाएँ पैर में एक काँटा चुभ गया और वहाँ एक फोड़ा निकल आया। धीरे-धीरे फोड़ा बड़ा होने लगा और देखते ही देखते वो बैंगन जितना बड़ा हो गया।

टुनटुनी ने आवाज़ लगाई, “आह! इतना बड़ा फोड़ा! अब मैं नाचूँगी कैसे? मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ? अरे! कोई है जो मेरी मदद कर पाए और इस फोड़े को सलीके से काट पाए?”

तभी एक राह चलते मुसाफिर ने कहा, “यह फोड़ा तो एक हजाम ही काट सकता है। लेकिन कोई ऐसा-वैसा हजाम नहीं, शाही हजाम। तुम शाही हजाम के पास जाओ। वह तुम्हारे फोड़े को बड़े ही सलीके से काट देगा।”

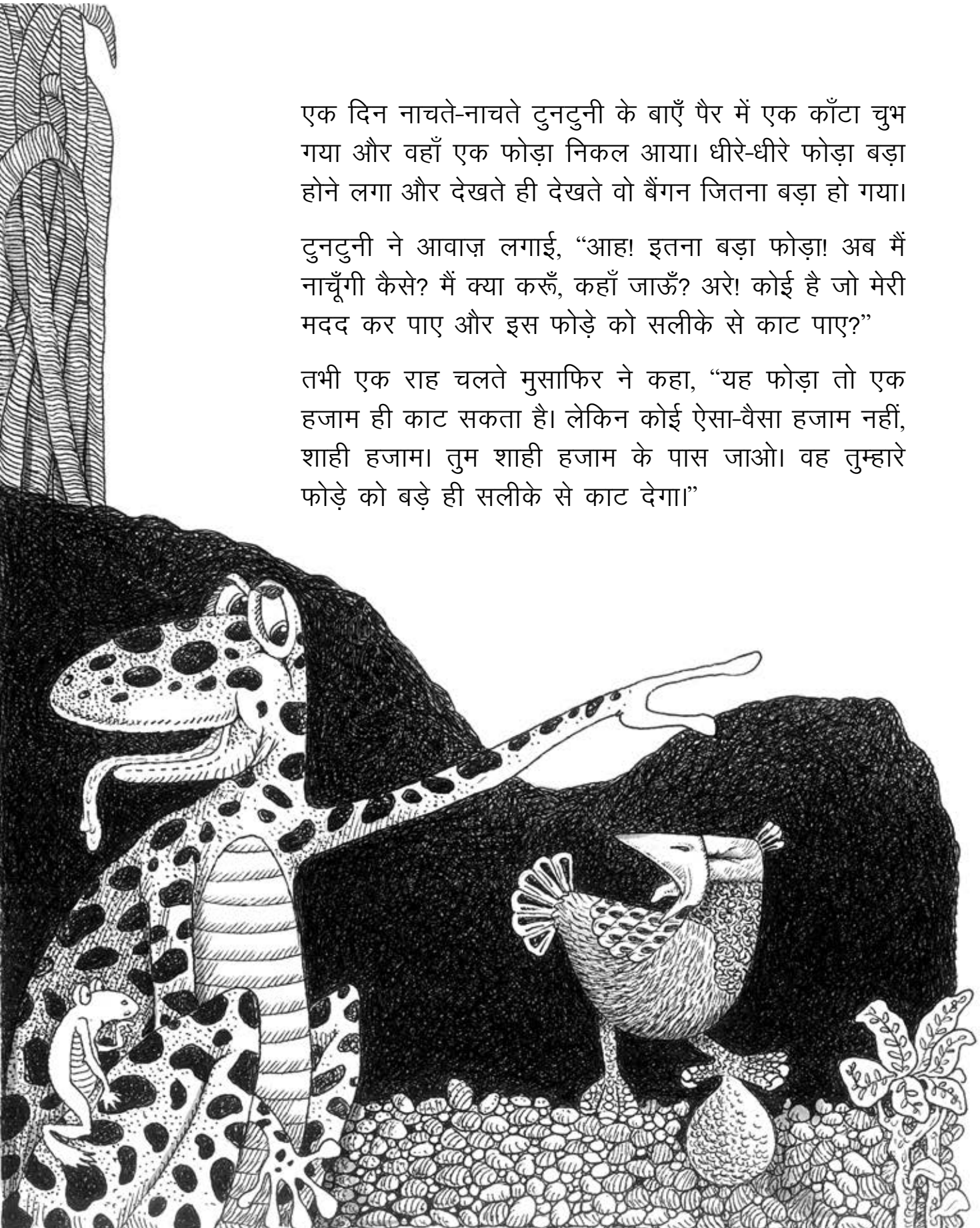

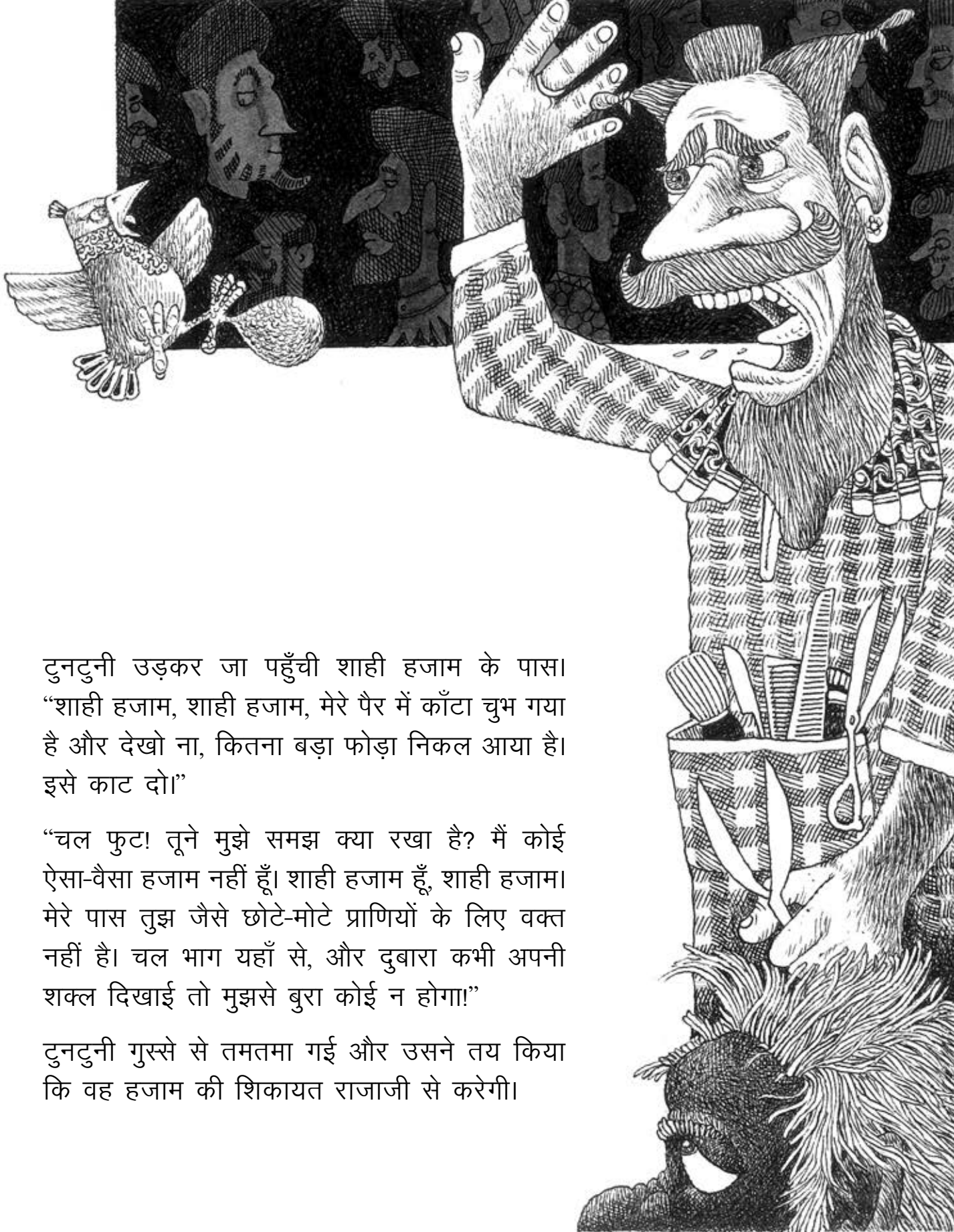

टुनटुनी उड़कर जा पहुँची शाही हजाम के पास। “शाही हजाम, शाही हजाम, मेरे पैर में काँटा चुभ गया है और देखो ना, कितना बड़ा फोड़ा निकल आया है। इसे काट दो।”

“चल फुट! तूने मुझे समझ क्या रखा है? मैं कोई ऐसा-वैसा हजाम नहीं हूँ। शाही हजाम हूँ, शाही हजाम। मेरे पास तुझ जैसे छोटे-मोटे प्राणियों के लिए वक्त नहीं है। चल भाग यहाँ से, और दुबारा कभी अपनी शक्ल दिखाई तो मुझसे बुरा कोई न होगा!”

टुनटुनी गुस्से से तमतमा गई और उसने तय किया कि वह हजाम की शिकायत राजाजी से करेगी।

राजाजी अपने बड़े-से महल के बड़े-से दरबार के बड़े-से सिंहासन पर बैठे हुए थे।

“प्रणाम राजाजी! मैं आपसे यह कहने आई हूँ कि आप अपने हजाम को दण्ड दें और उसे नौकरी से बर्खास्त कर दें।”

“क्यों भला? मेरे हजाम ने ऐसा क्या किया?” राजाजी ने टुनटुनी से पूछा।

“मैंने उससे अपने बाएँ पैर का यह फोड़ा काटने को कहा तो उसने मुझे बड़ी बेरहमी से भगा दिया।”

राजा ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा और हँसते-हँसते बोला, “बेवकूफ चिड़िया! सिपाहियो, बाहर निकालो इसे।”

यह अपमान टुनटुनी को नाकाबिले बर्दाश्त था। उसने तय किया कि वह अपने दोस्त चूहे से मदद लेगी।

“चूहे दोस्त, चूहे दोस्त, क्या तुम घर पर हो?” टुनटुनी ने आवाज़ लगाई।

चूहा दोस्त बोला, “कौन भाई? ओ! टूनी, आओ, बैठो, खाट बिछा दूँ, खाना लगा दूँ, खाओगी?”

“खाऊँगी तो, लेकिन पहले तुम जाकर उस बड़े-से राजा के बड़े-से पेट को कुतर डालो।”

“क्या बात कर रही हो टूनी? मैंने ऐसा किया तो राजा के सिपाही मुझे कैदखाने में बन्द कर देंगे। मैं यह काम नहीं कर सकता।”

“तो फिर मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खाऊँगी।” यह कहकर टुनटुनी उड़ी और गाय के घर जा पहुँची।

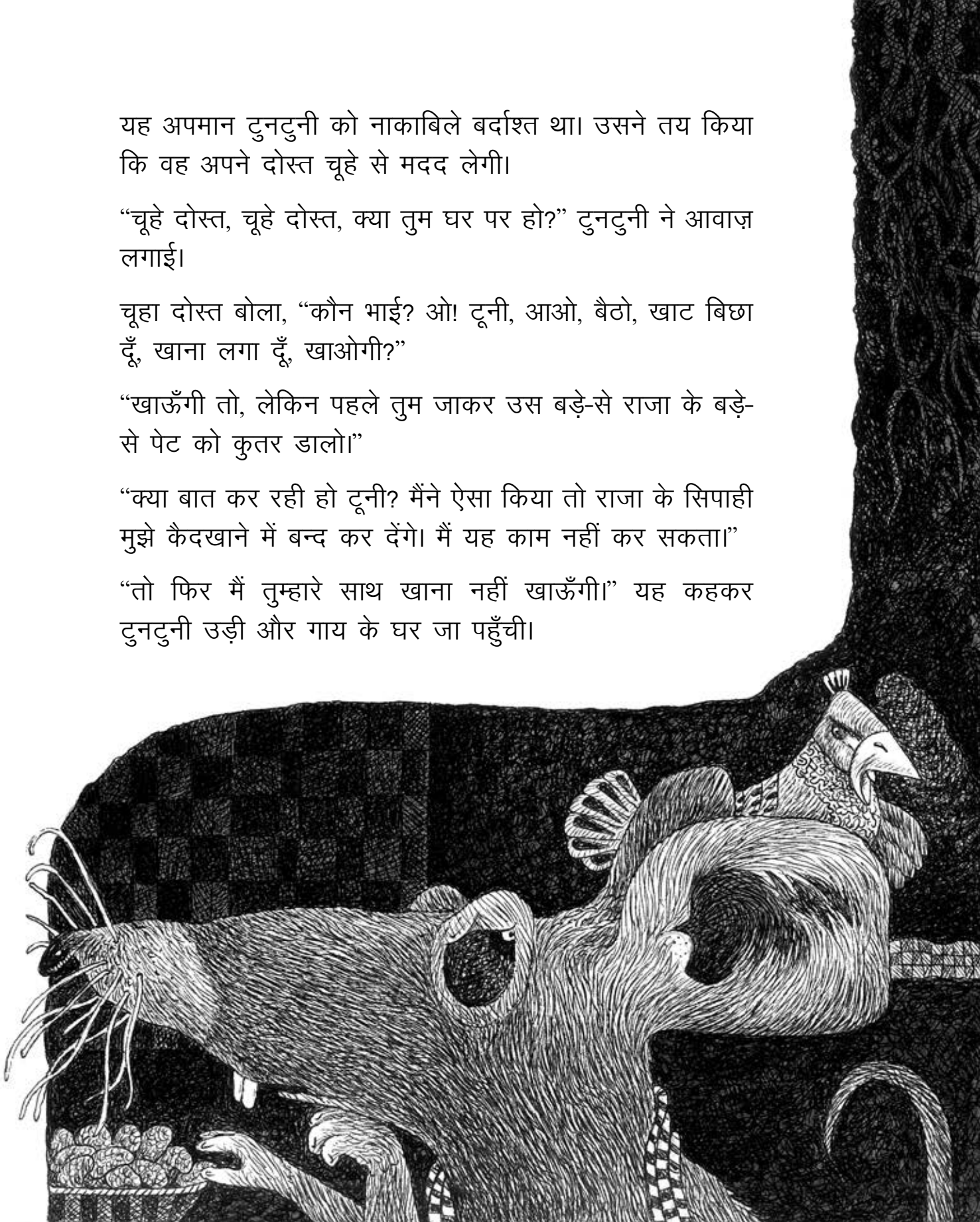

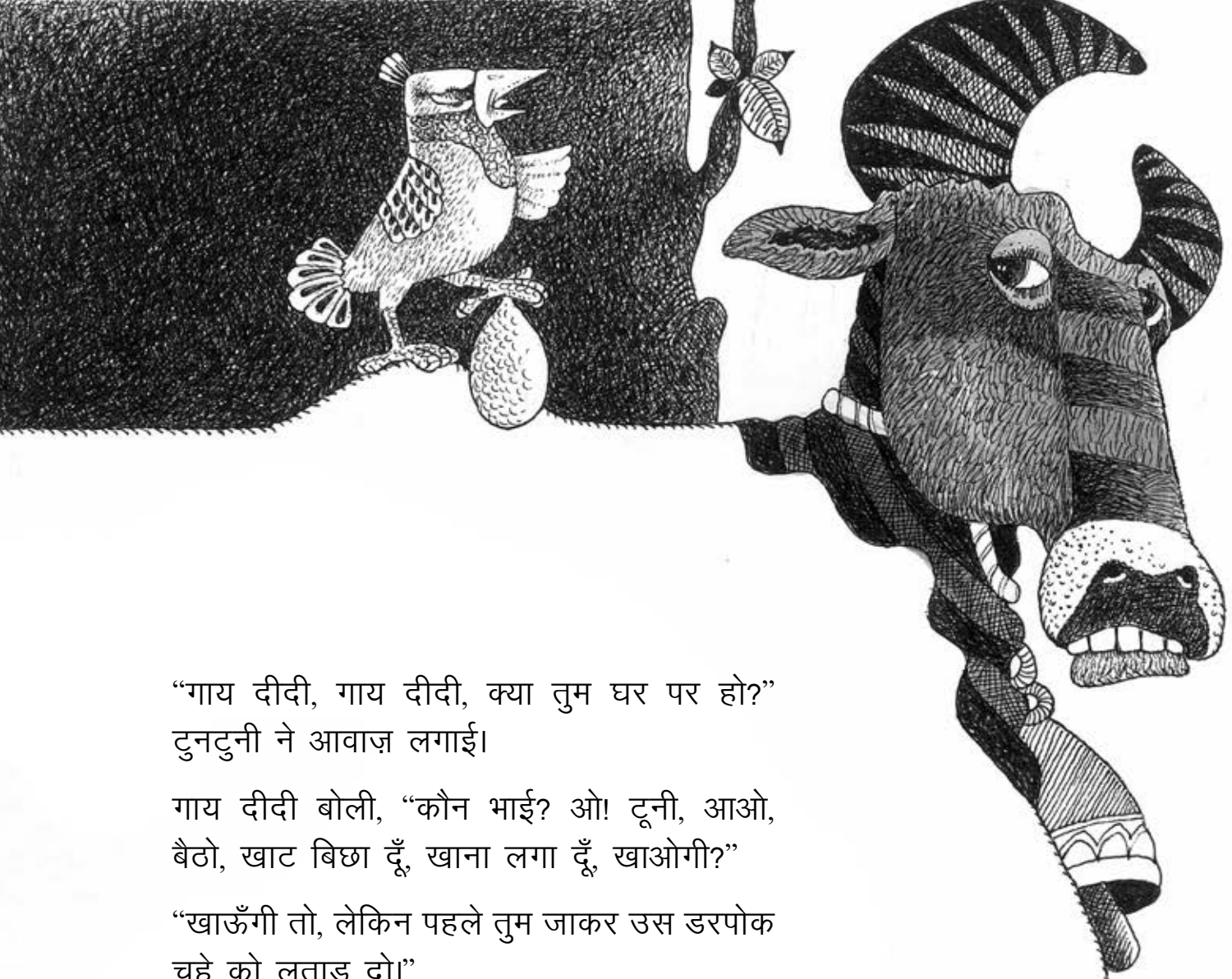

“गाय दीदी, गाय दीदी, क्या तुम घर पर हो?” टुनटुनी ने आवाज़ लगाई।

गाय दीदी बोली, “कौन भाई? ओ! टूनी, आओ, बैठो, खाट बिछा दूँ, खाना लगा दूँ, खाओगी?”

“खाऊँगी तो, लेकिन पहले तुम जाकर उस डरपोक चूहे को लताड़ दो।”

“टूनी, मैं सुबह से सड़क पर बैठी गाड़ियों को रोक-रोककर थक गई हूँ। अब मुझसे नहीं उठा जाएगा।”

“तो फिर मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खाऊँगी।” यह कहकर टुनटुनी उड़ी और कुत्ते के घर जा पहुँची।

“कुत्ते भाई, कुत्ते भाई, क्या तुम घर पर हो?” टुनटुनी ने आवाज़ लगाई।

कुत्ते भाई बोले, “कौन भाई? ओ! टूनी, आओ, बैठो, खाट बिछा दूँ, खाना लगा दूँ, खाओगी?”

“खाऊँगी तो, लेकिन पहले तुम जाकर उस आलसी गाय को काट लो।”

“क्या कह रही हो टूनी? दिमाग तो सही है तुम्हारा? गाय को काटना तो दूर, हम तो गाय को तंग भी नहीं कर सकते। राजाजी ने गाय पे भौंकने पर चालान काटना भी शुरू कर दिया है। मैं यह काम नहीं कर सकता।”

“तो फिर मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खाऊँगी।” यह कहकर टुनटुनी उड़ी और डण्डे के घर जा पहुँची।

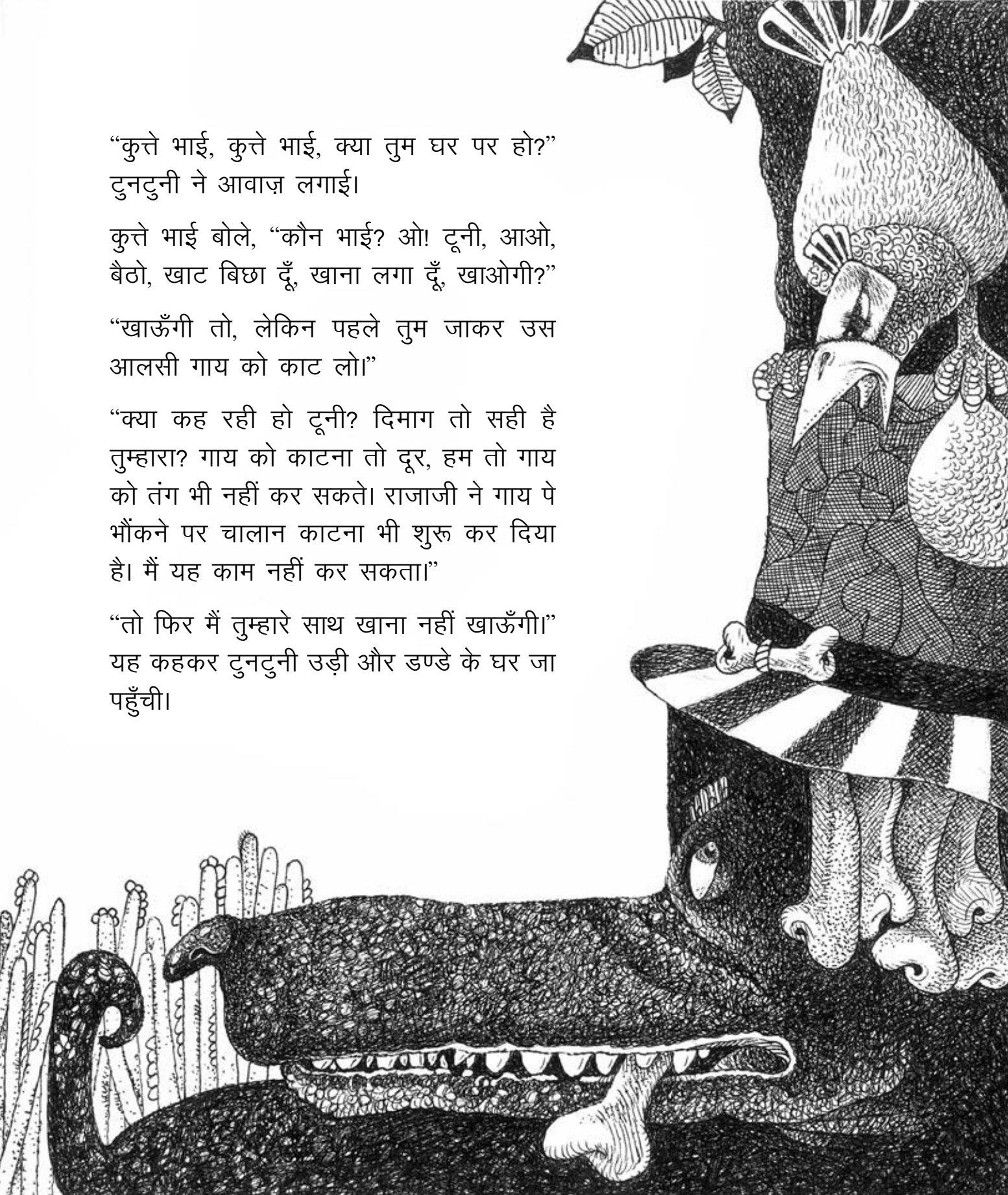

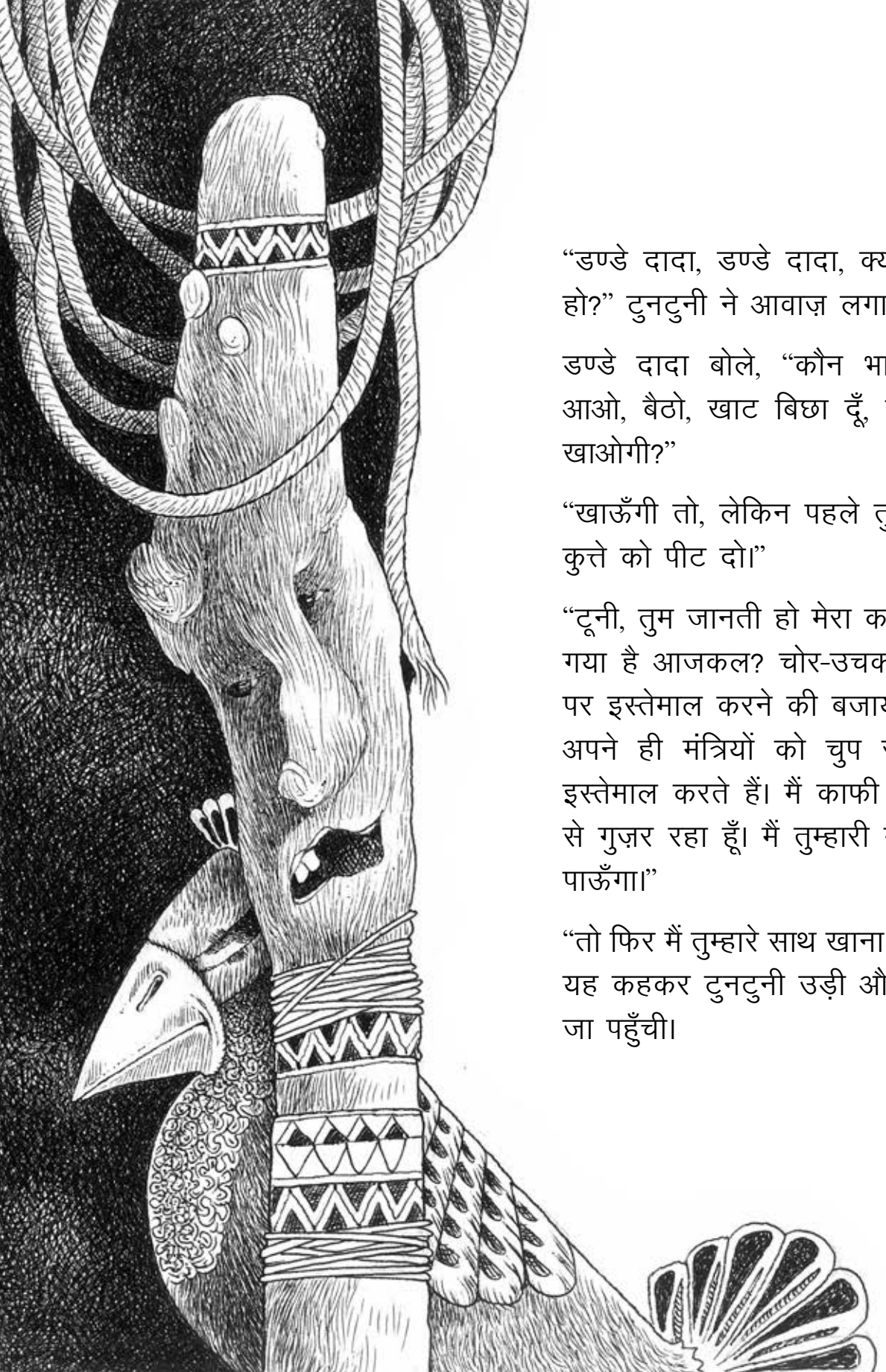

“डण्डे दादा, डण्डे दादा, क्या तुम घर पर हो?” टुनटुनी ने आवाज़ लगाई।

डण्डे दादा बोले, “कौन भाई? ओ! टूनी, आओ, बैठो, खाट बिछा दूँ, खाना लगा दूँ, खाओगी?”

“खाऊँगी तो, लेकिन पहले तुम जाकर उस कुत्ते को पीट दो।”

“टूनी, तुम जानती हो मेरा काम कितना बढ़ गया है आजकल? चोर-उचक्कों और गुण्डों पर इस्तेमाल करने की बजाय राजाजी मुझे अपने ही मंत्रियों को चुप रखने के लिए इस्तेमाल करते हैं। मैं काफी तनाव के दौर से गुज़र रहा हूँ। मैं तुम्हारी मदद नहीं कर पाऊँगा।”

“तो फिर मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खाऊँगी।” यह कहकर टुनटुनी उड़ी और आग के घर जा पहुँची।

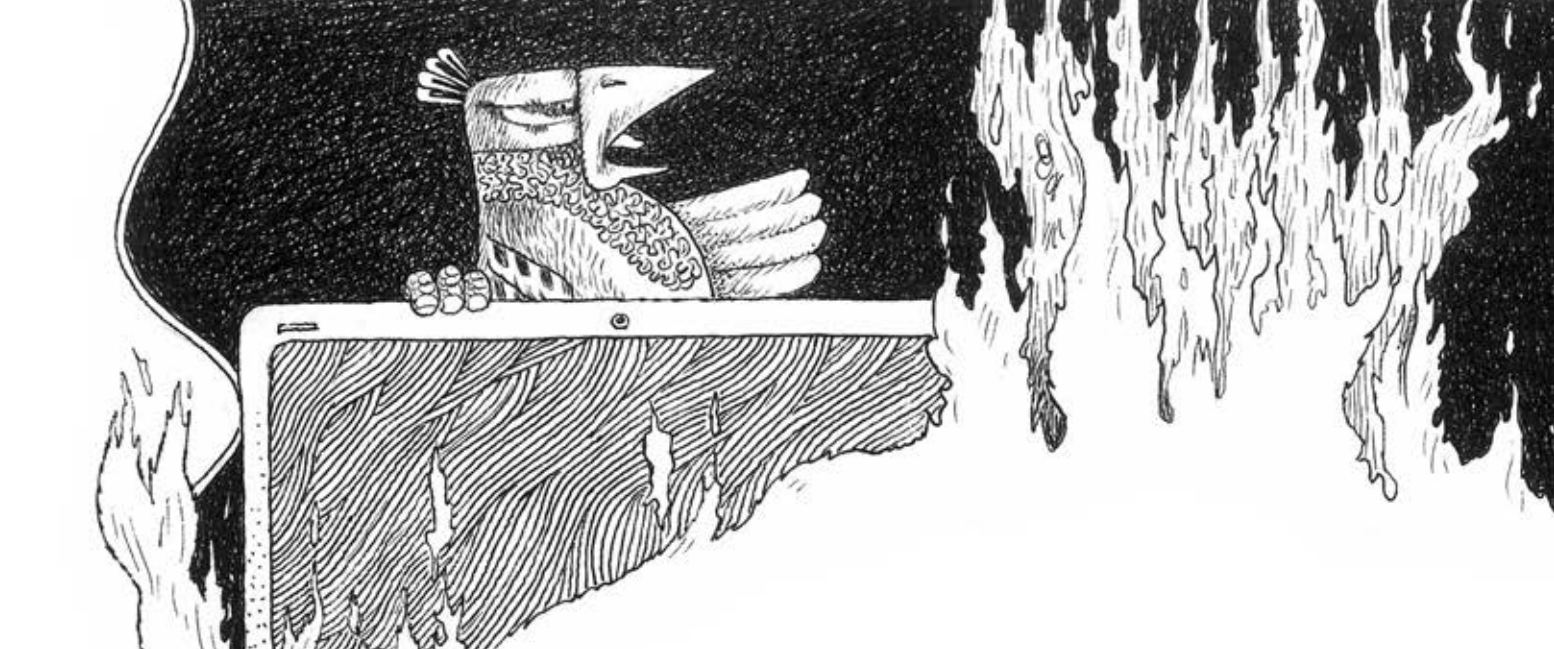

"आग मौसी, आग मौसी, क्या तुम घर पर हो?" टुनटुनी ने आवाज़ लगाई।

आग मौसी बोली, "कौन भाई? ओ! टूनी, आओ, बैठो, खाट बिछा दूँ, खाना लगा दूँ, खाओगी?"

"खाऊँगी तो, लेकिन पहले तुम जाकर उस डण्डे को जला दो।"

"टूनी, मैं आजकल बड़ी व्यस्त हूँ। लोग बात-बात पर भड़क उठते हैं, एक-दूसरों को जला भी रहे हैं। मुझे इन सब से फुर्सत नहीं है। इन हालात में मेरी बड़ी ज़रूरत पड़ रही है लोगों को। तो अभी तो मैं कहीं और नहीं जा पाऊँगी।"

"तो फिर मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खाऊँगी।" यह कहकर टुनटुनी उड़ी और समुद्र के घर जा पहुँची।

“समुद्र बाबा, समुद्र बाबा, क्या तुम घर पर हो?” टुनटुनी ने आवाज़ लगाई।

समुद्र बाबा बोले, “कौन भाई? ओ! टूनी, आओ, बैठो, खाट बिछा दूँ, खाना लगा दूँ, खाओगी?”

“खाऊँगी तो, लेकिन पहले तुम जाकर उस आग को बुझा दो।”

“टूनी, आजकल गर्मी इतनी हो गई है कि हिमनदियाँ पिघल-पिघलकर मेरे वज़न को बढ़ाती जा रही हैं। मेरे लिए तो चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया है। ऐसी हालत में मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता।”

“तो फिर मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खाऊँगी।” यह कहकर टुनटुनी उड़ी और हाथी के घर जा पहुँची।

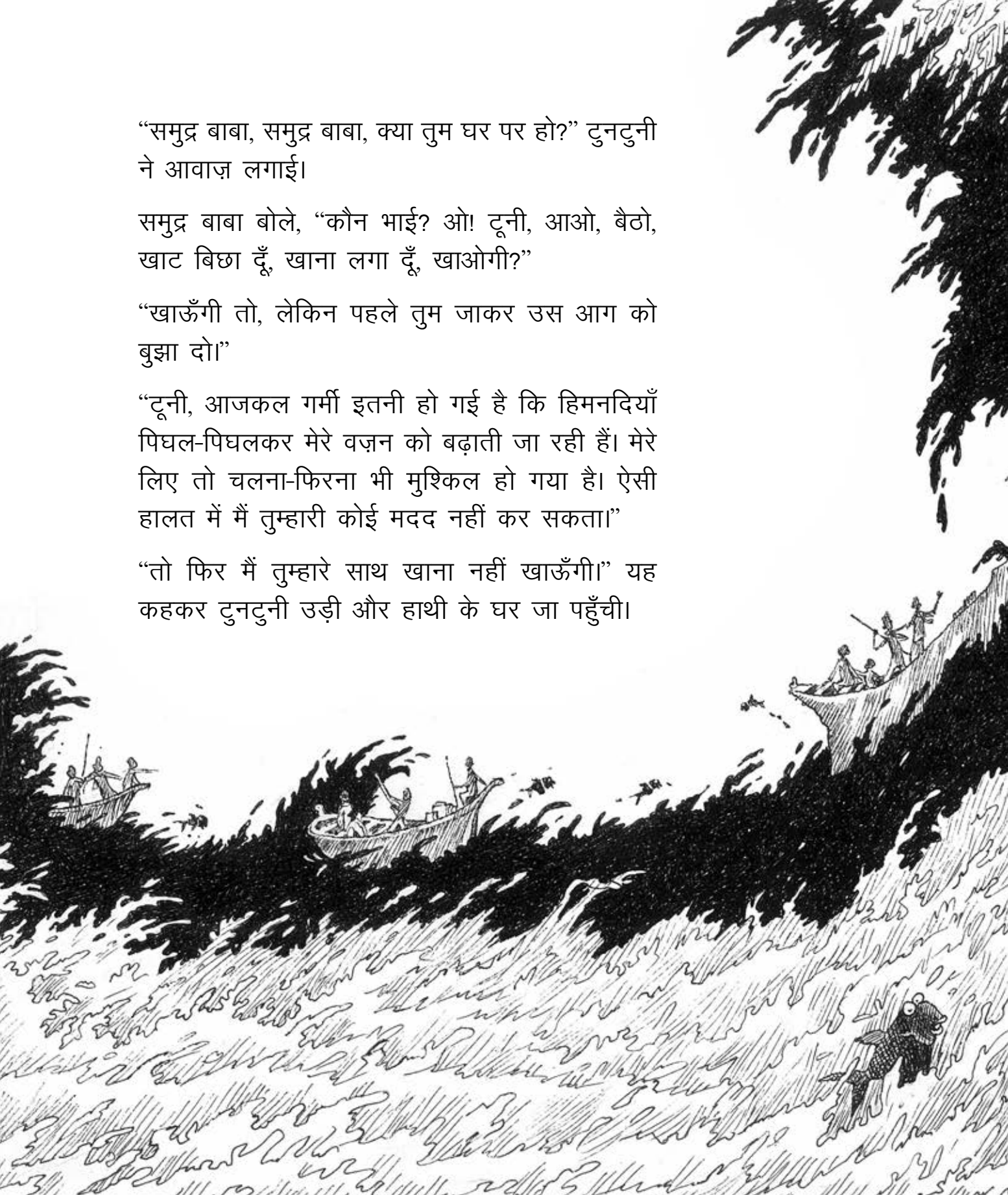

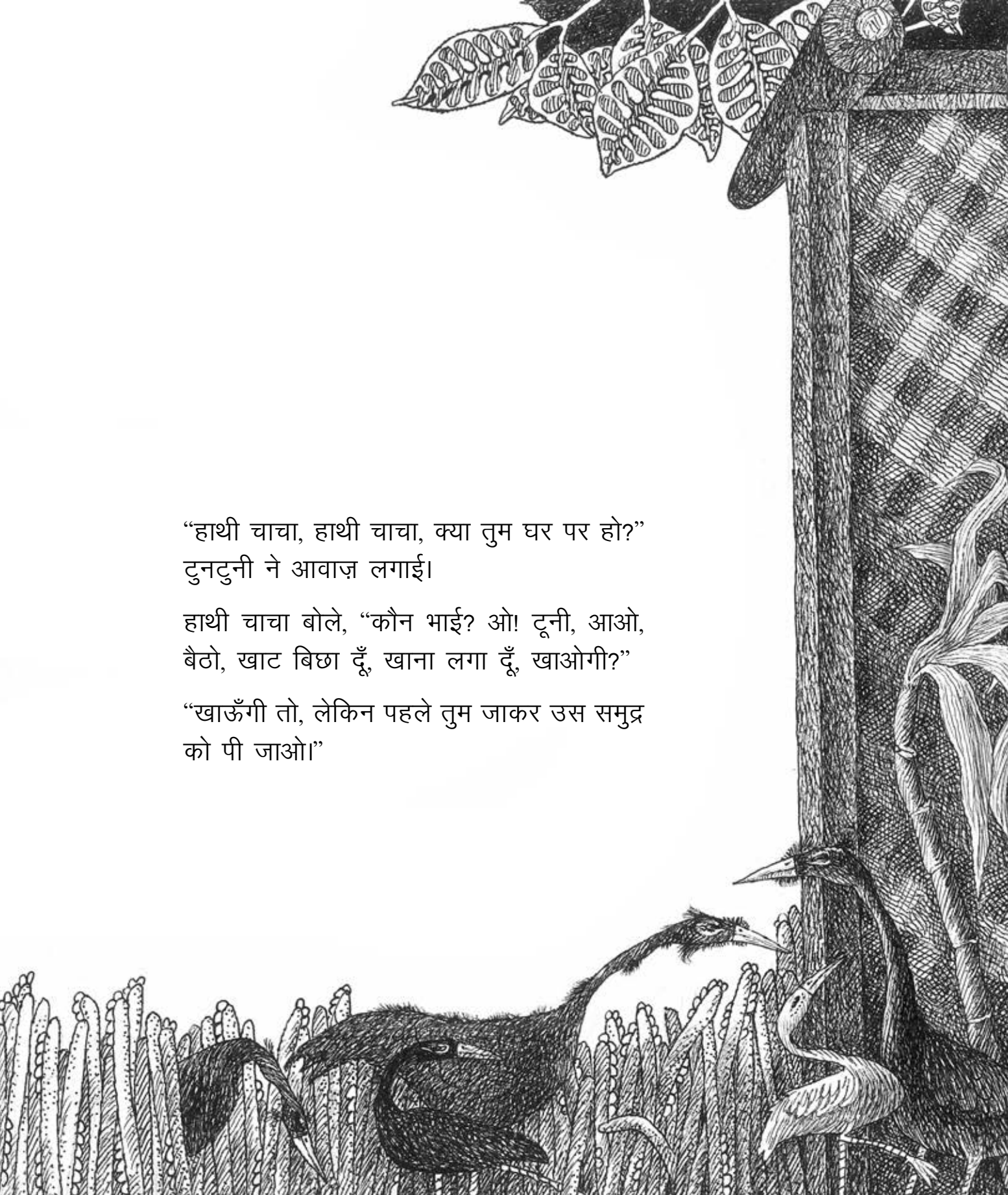

“हाथी चाचा, हाथी चाचा, क्या तुम घर पर हो?” टुनटुनी ने आवाज़ लगाई।

हाथी चाचा बोले, “कौन भाई? ओ! टूनी, आओ, बैठो, खाट बिछा दूँ, खाना लगा दूँ, खाओगी?”

“खाऊँगी तो, लेकिन पहले तुम जाकर उस समुद्र को पी जाओ।”

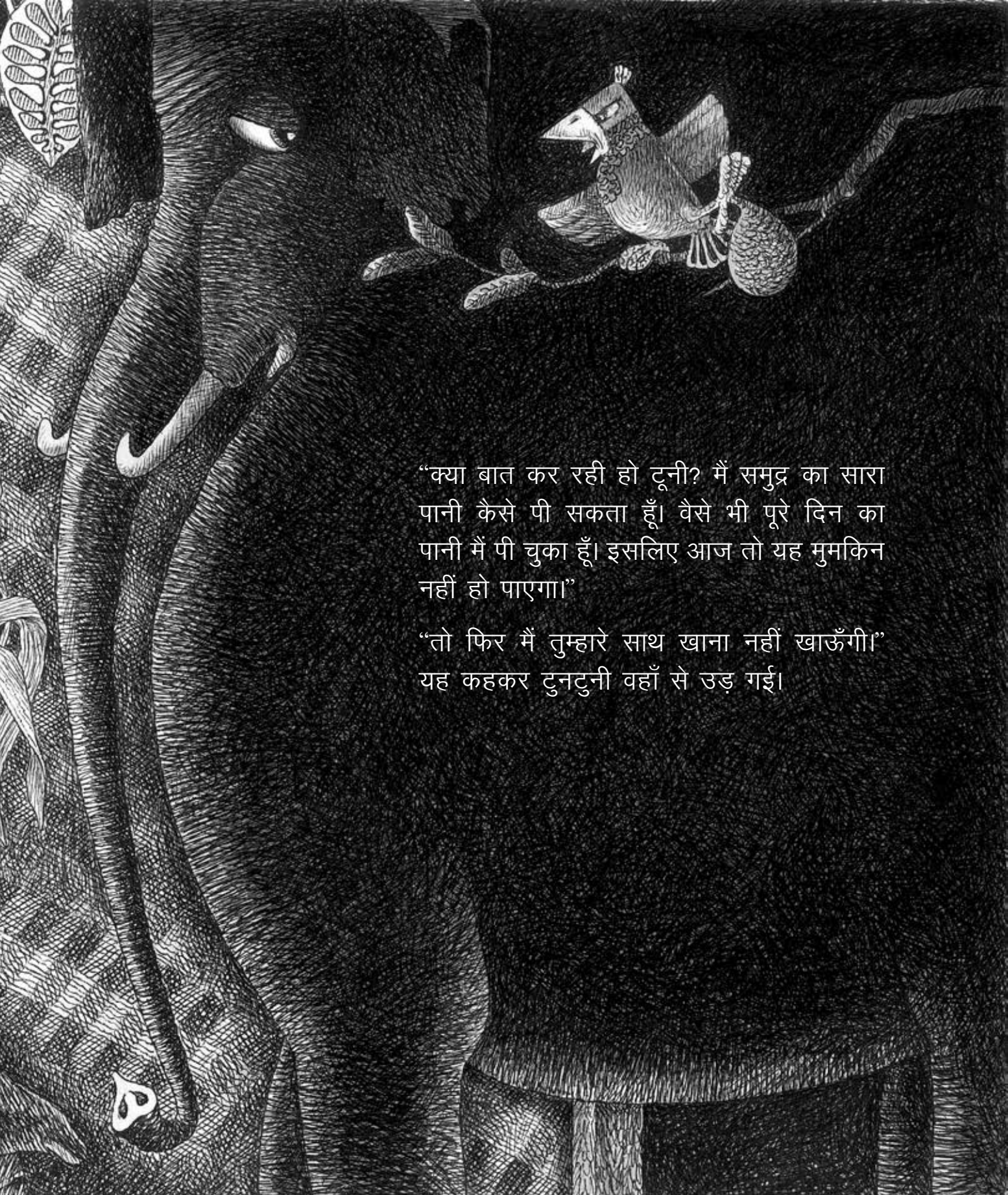

“क्या बात कर रही हो टूनी? मैं समुद्र का सारा पानी कैसे पी सकता हूँ। वैसे भी पूरे दिन का पानी मैं पी चुका हूँ। इसलिए आज तो यह मुमकिन नहीं हो पाएगा।”

“तो फिर मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खाऊँगी।” यह कहकर टुनटुनी वहाँ से उड़ गई।

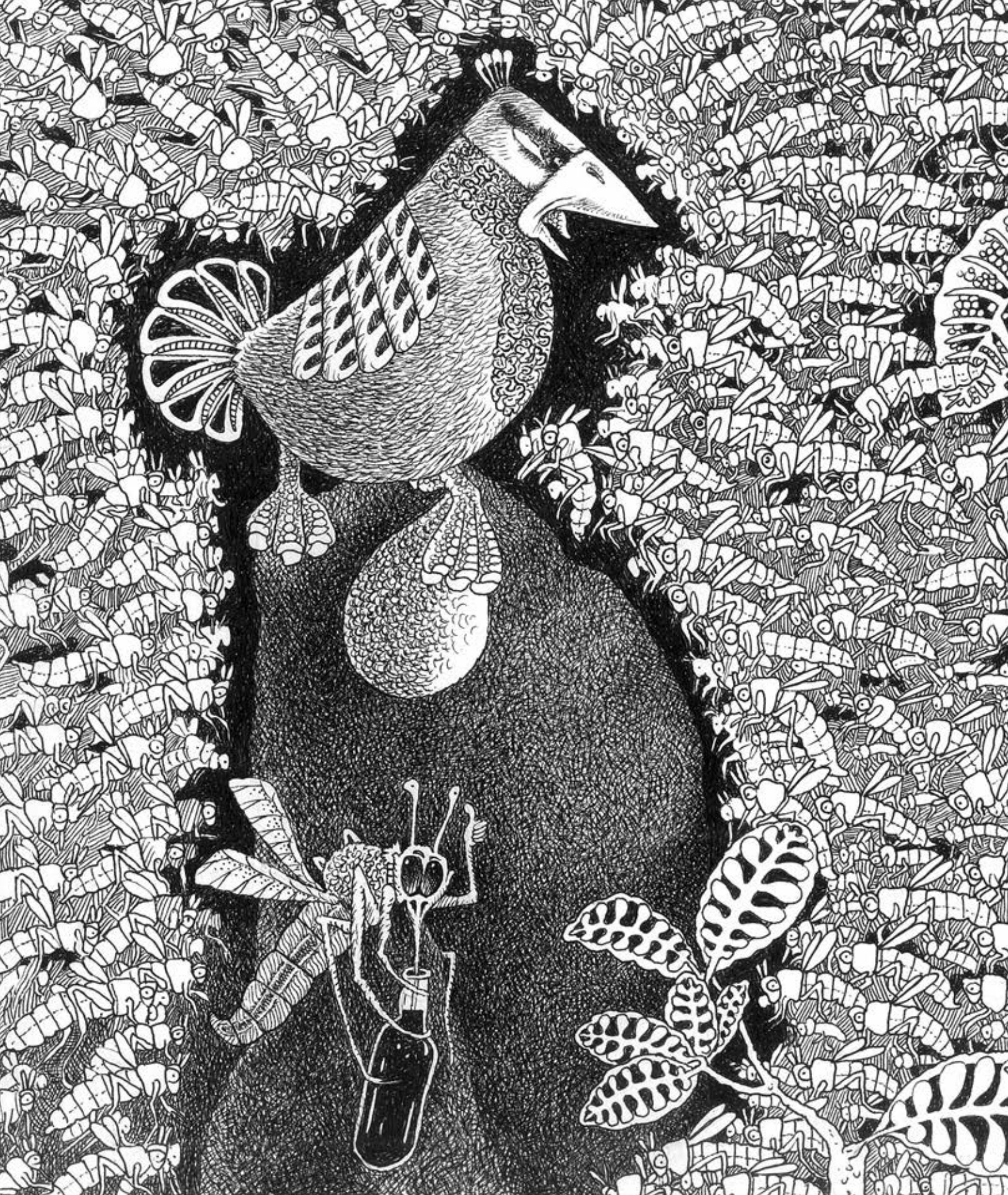

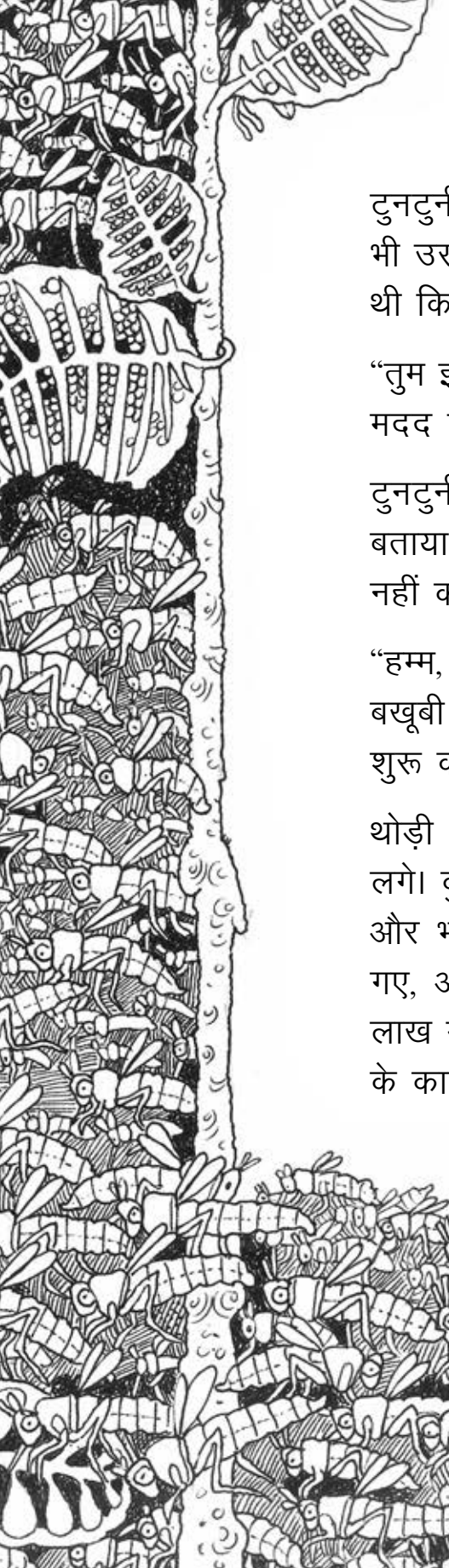

टुनटुनी अब नाउम्मीद और हताश हो चुकी थी। किसी एक ने भी उसकी मदद नहीं की। वह एक पत्थर पर सर झुकाए बैठी थी कि तभी एक मच्छर टुनटुनी के इर्द-गिर्द घूमने लगी।

“तुम इतनी उदास क्यों हो टुनटुनी? क्या बात हो गई? मैं कुछ मदद कर सकती हूँ?” मच्छर ने पूछा।

टुनटुनी ने मच्छर को अपने दिन भर की आपबीती के बारे में बताया। “पर मैं यह सब तुम्हें क्यों बता रही हूँ, तुम मेरी मदद नहीं कर पाओगी। तुम तो मुझसे भी बहुत छोटी हो।”

“हम्म, यह बात तो है। छोटी तो मैं हूँ पर तुम्हारी मदद मैं बखूबी कर सकती हूँ!” यह कहते ही, उस मच्छर ने भनभनाना शुरू कर दिया।

थोड़ी ही देर में वहाँ सौ और मच्छर आ गए और भनभनाने लगे। कुछ वक्त और बीता था कि हज़ार मच्छर जमा हो गए और भनभन करने लगे। फिर, दस हज़ार मच्छर इकट्ठा हो गए, और सब के सब भनभन करने लगे। धीरे-धीरे होते-होते लाख मच्छर तक इकट्ठा हो गए, और फिर इन लाख मच्छरों के काले बादल ने हाथी की तरफ उड़ना शुरू कर दिया।

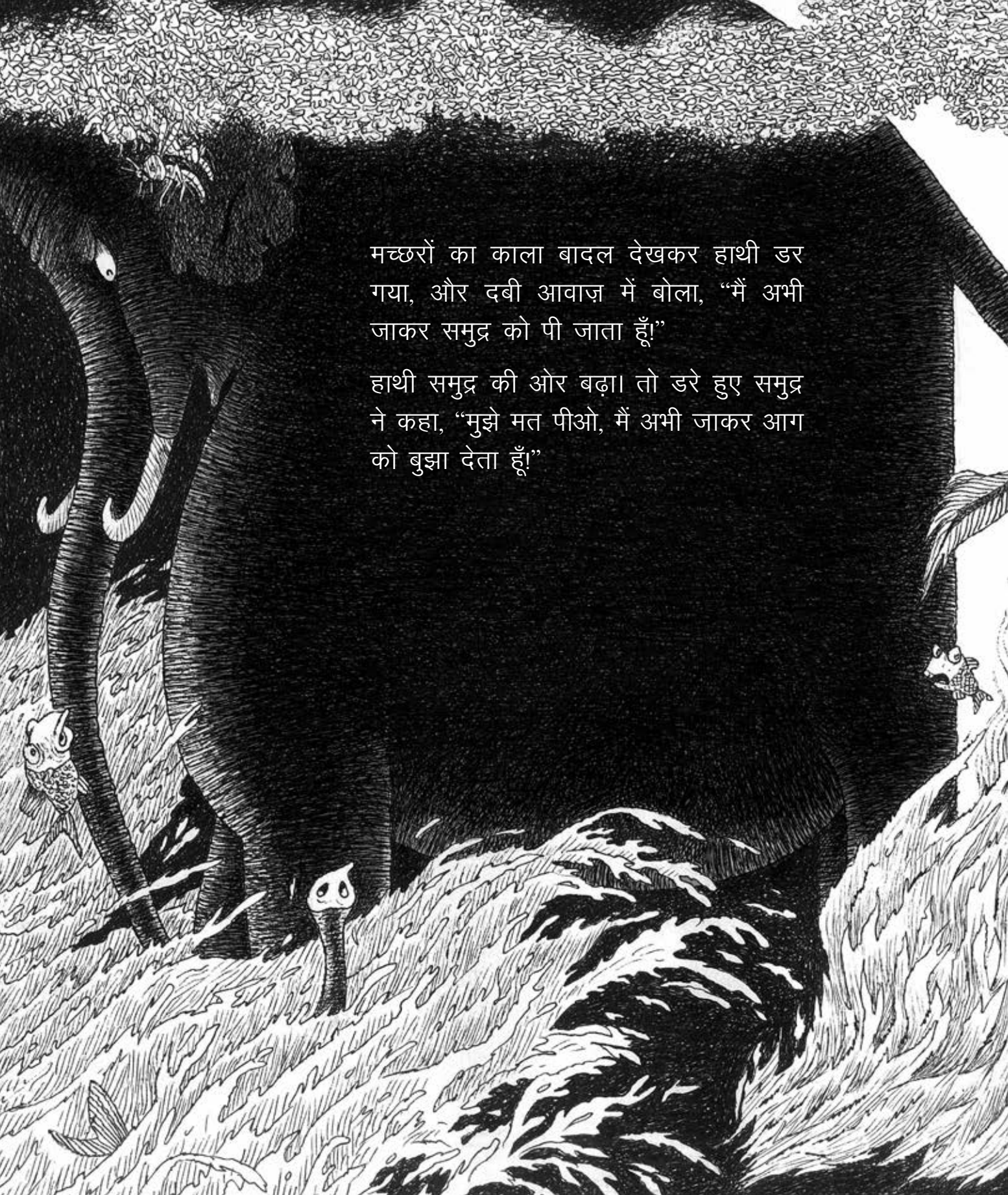

मच्छरों का काला बादल देखकर हाथी डर गया, और दबी आवाज़ में बोला, “मैं अभी जाकर समुद्र को पी जाता हूँ!”

हाथी समुद्र की ओर बढ़ा। तो डरे हुए समुद्र ने कहा, “मुझे मत पीओ, मैं अभी जाकर आग को बुझा देता हूँ!”

समुद्र आग की ओर बढ़ा। तो घबराई हुई आग बोली, “मुझे मत बुझाओ, मैं अभी जाकर डण्डे को जला देती हूँ!”

आग डण्डे की ओर बढ़ी। तो कलमलाते हुए डण्डे ने कहा, “मुझे मत जलाओ, मैं अभी जाकर उस कुत्ते को पीट देता हूँ!”

डण्डा कुत्ते की ओर बढ़ा। तो दुम दबाकर भागते हुए कुत्ते ने कहा, “मुझे मत पीटो, मैं अभी जाकर गाय को काट लेता हूँ!”

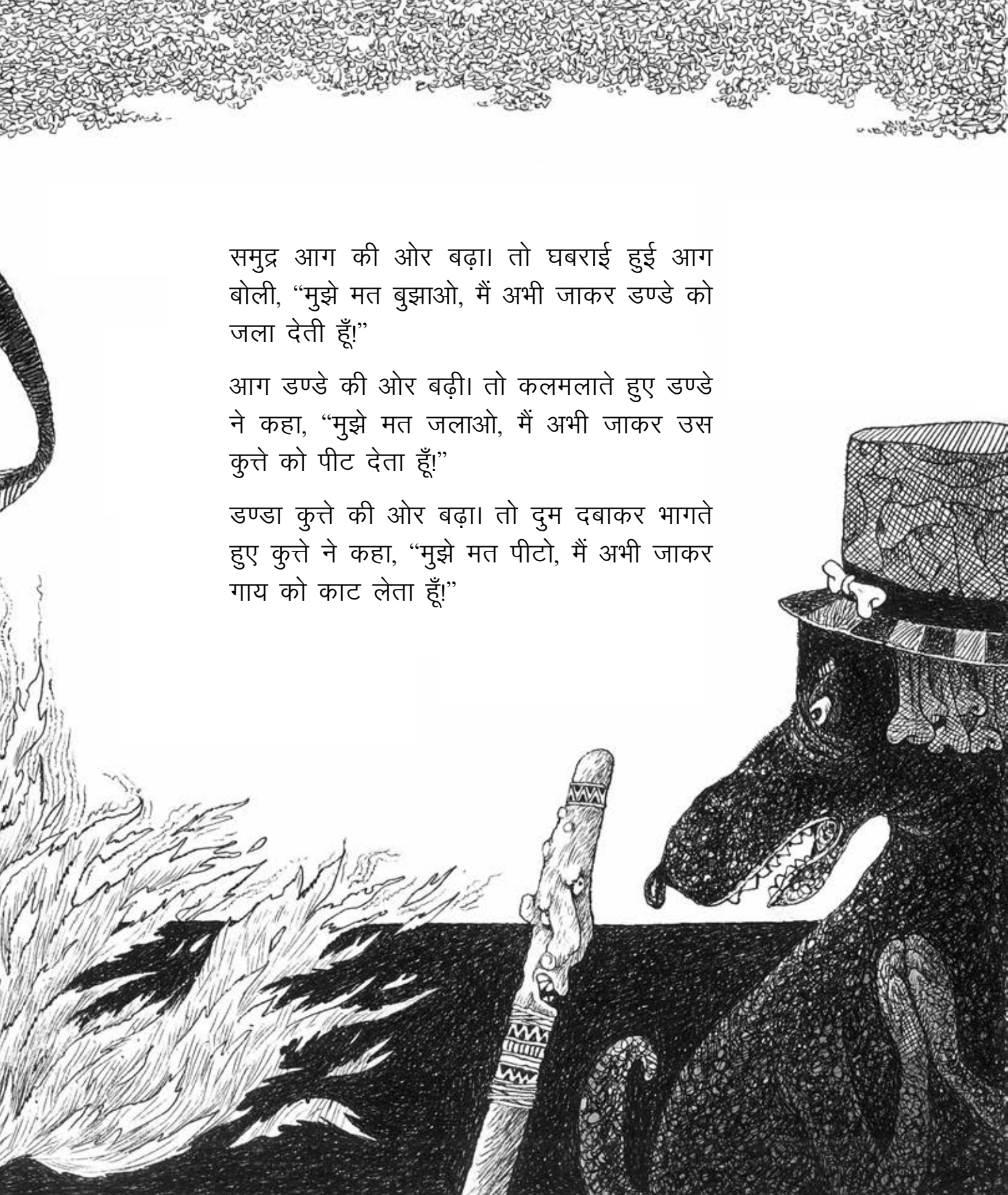

कुत्ता गाय की ओर बढ़ा। तो सहमी हुई गाय बोली, “मुझे मत काटो, मैं अभी जाकर उस डरपोक चूहे को लताड़ देती हूँ!”

गाय चूहे की ओर बढ़ी। तो थरथराता हुआ चूहा रोया, “मुझे मत लताड़ो, मैं अभी जाकर राजा के बड़े-से पेट को कुतर डालता हूँ!”

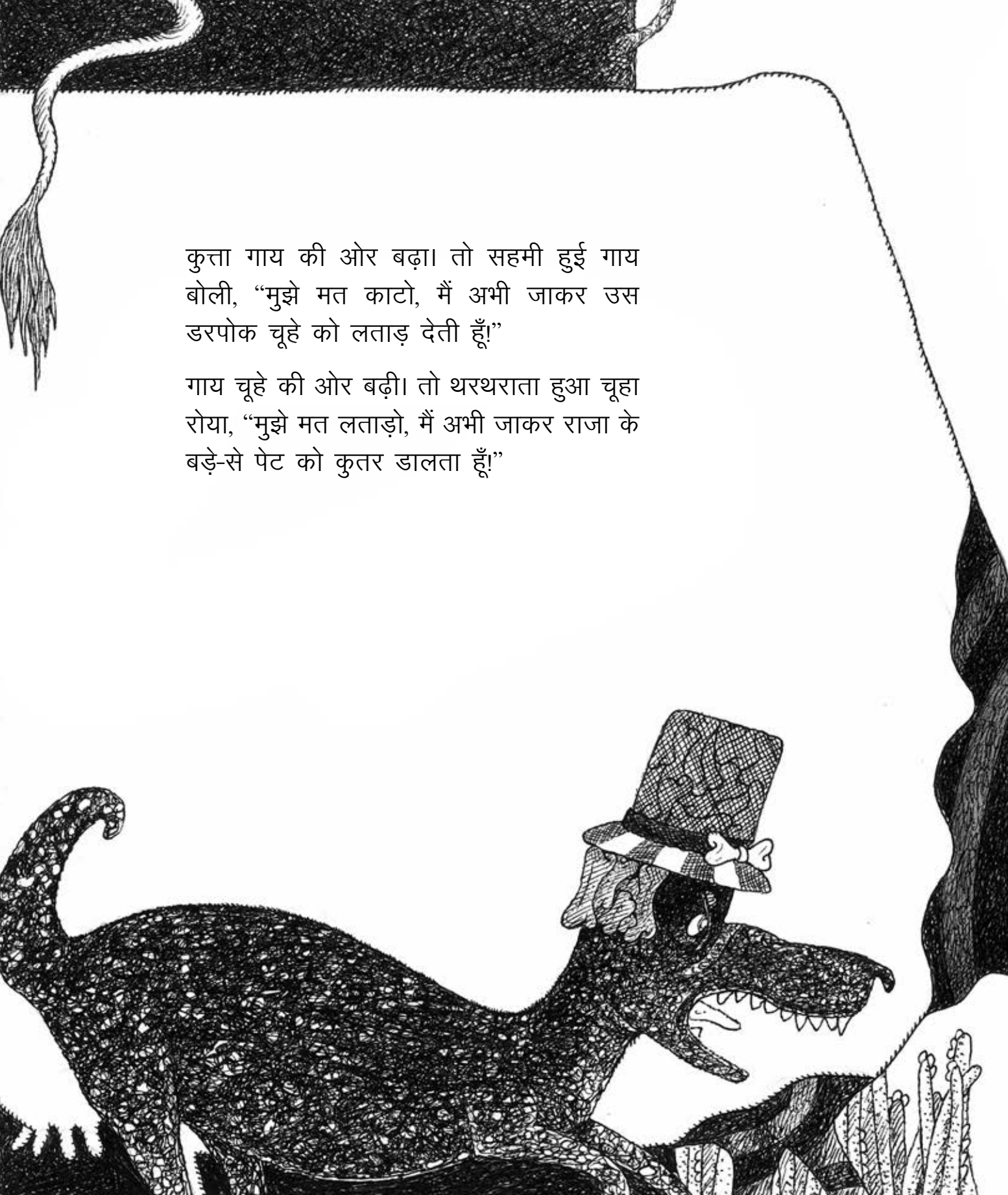

चूहा तेज़ी-से दौड़कर बड़े-से राजा के बड़े-से महल के बड़े-से दरबार में घुस गया। और जैसे ही राजा ने चूहे को अपनी ओर तेज़ी-से आते हुए देखा, उसने डर के मारे चिल्लाना शुरू कर दिया, “शाही हजाम को बुलाओ, शाही हजाम को बुलाओ!”

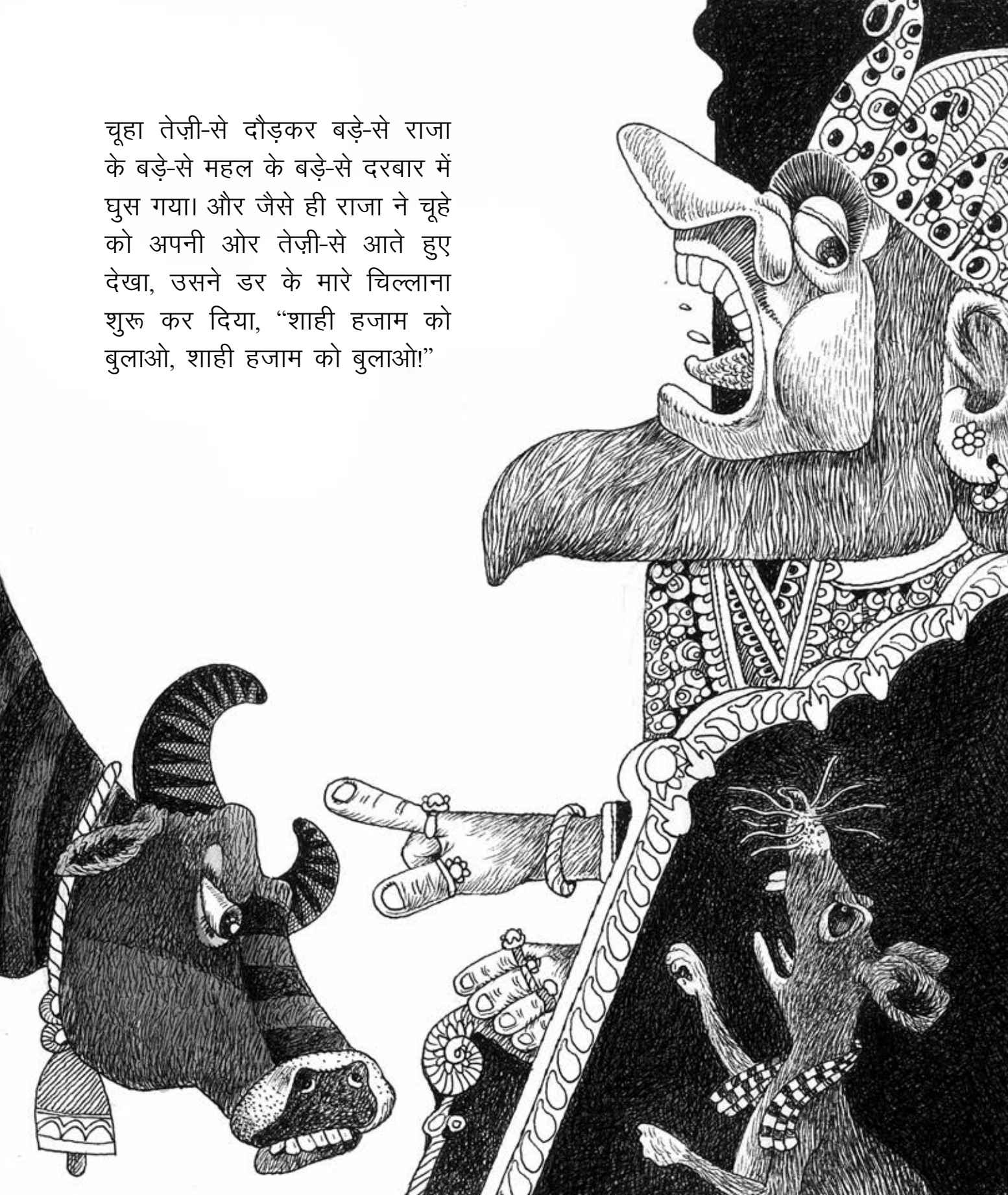

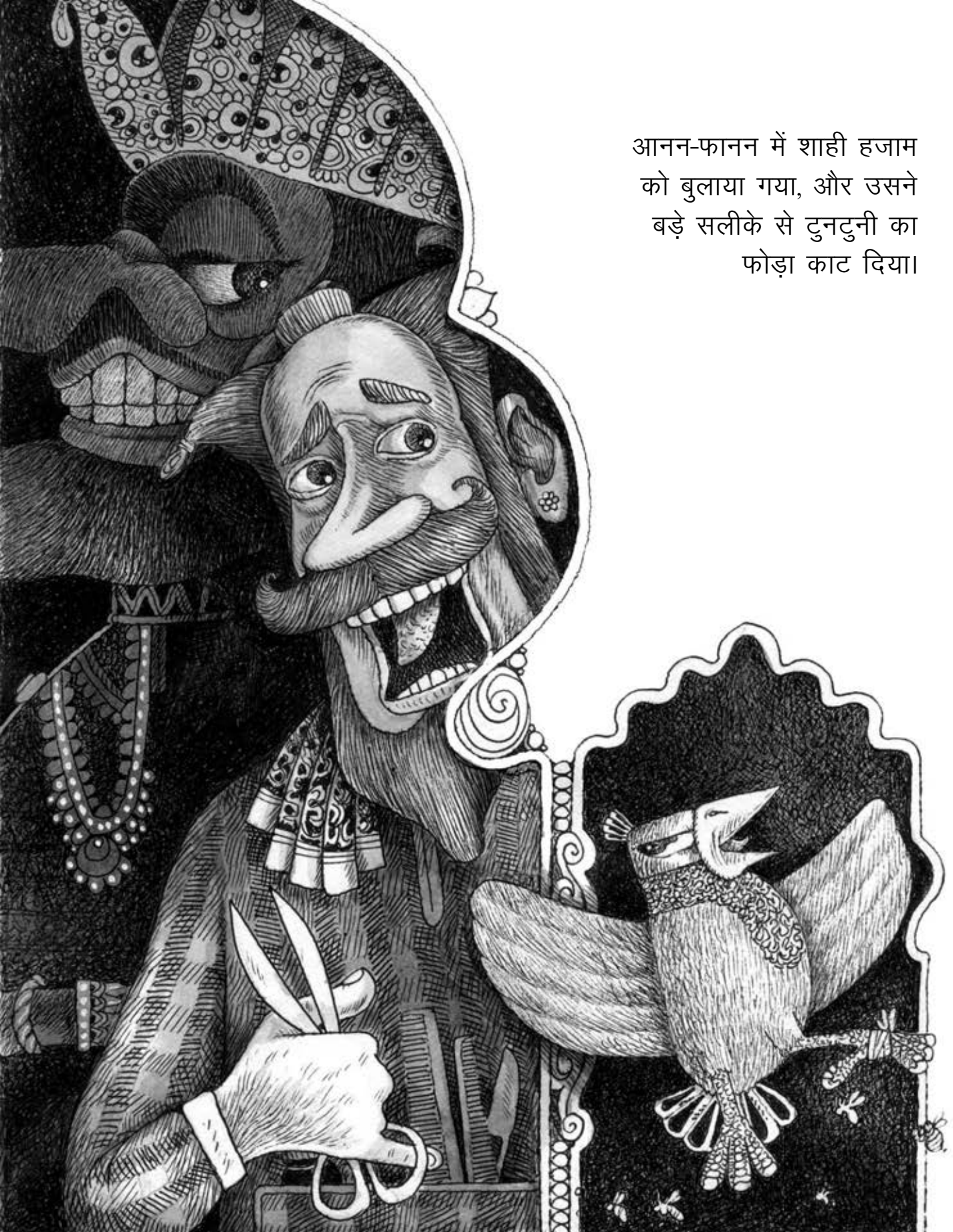

आनन-फानन में शाही हजाम
को बुलाया गया, और उसने
बड़े सलीके से टुनटुनी का
फोड़ा काट दिया।

टुनटुनी उड़ी और अपने छोटे-से बैंगन के झाड़ की छोटी-सी टहनी पर बैठकर अपना सबसे पसन्दीदा काम करने लगी...

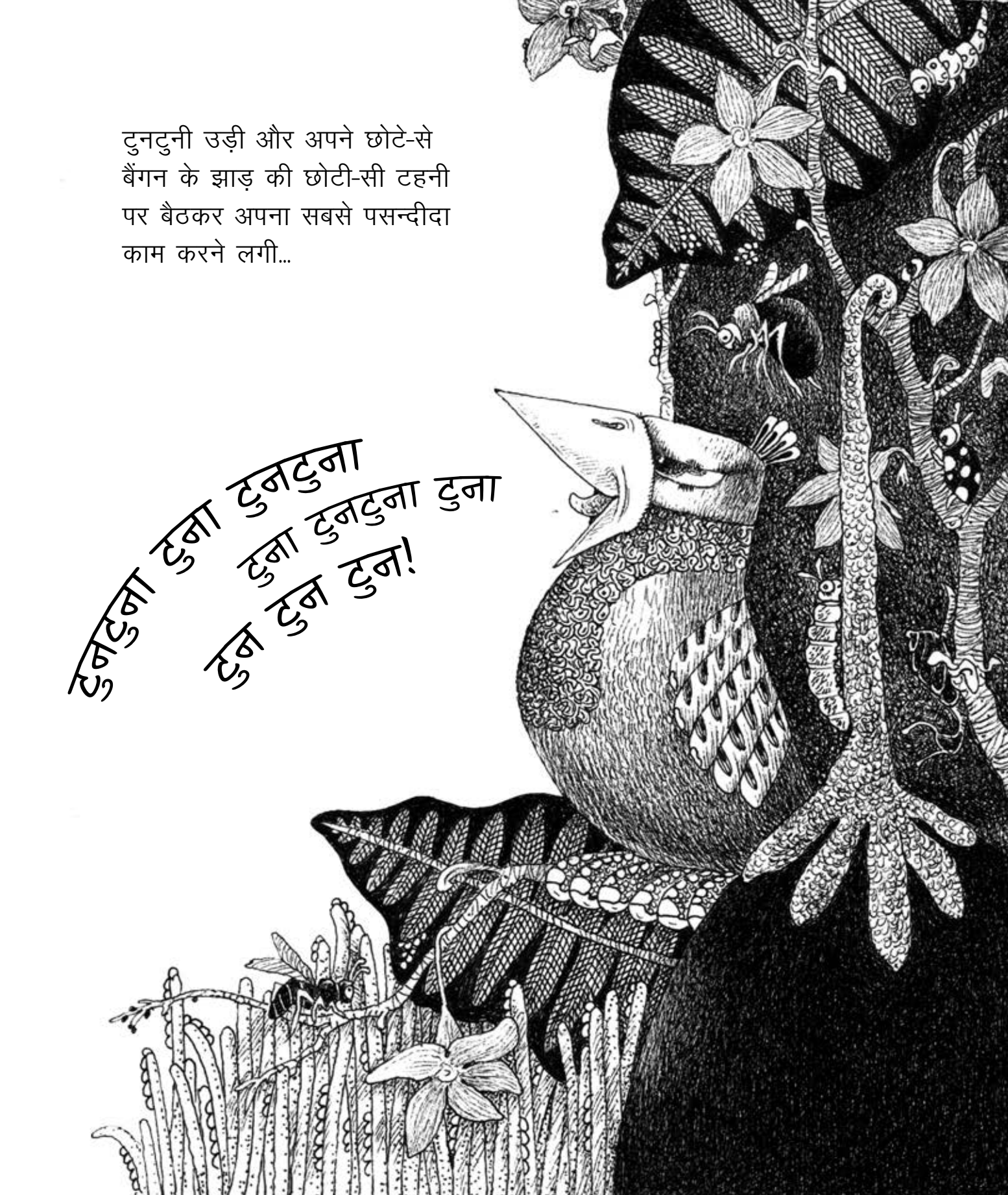

टुनटुनी
TUNTUNI

कहानी: कपिल पाण्डेय
चित्र: प्रशान्त सोनी
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: विनता विश्वनाथन, कनक शशि और कविता तिवारी

कपिल पाण्डेय, मार्च 2023

यह कहानी क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत बिना किसी बदलाव के गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

चित्र कॉपीराइट © प्रशान्त सोनी, मार्च 2023
परागइनिशिएटिव टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

पहला संस्करण: मार्च 2023 (1000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबी बोर्ड (कवर)

ISBN: 978-93-94552-56-2
मूल्य: ₹ 55.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

कपिल पाण्डेय

कपिल, द कुटुम्ब फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं और अपनी जीविका के लिए एक्सपीरिएंशल ग्राफिक डिज़ाइन का व्यवसाय चलाते हैं। कपिल एक कथावाचक, संगीतकार, कवि और ड्रामा-इन-एजुकेशन प्रैक्टिशनर हैं और इनका मानना है कि विचारों को पंख देने में ड्रामा एक अहम भूमिका निभाता है। कपिल आपको अक्सर पार्कों, स्कूलों, बस्तियों और लिट्रेचर फेस्टिवल्स में कहानियाँ सुनाते हुए मिल जाएँगे। कहानियों की दुनिया में अपने बढ़ते कदमों को कपिल कठिन सवाल पूछने और अपने आप को बेहतर समझ पाने की निगाह से देखते हैं।

कपिल अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ नोएडा में रहते हैं (इनकी पत्नी और बिटिया इनके इन-हाउस क्रिटिक्स हैं!)। जिस दौरान कपिल कहानियाँ नहीं सुनाते, उस दौरान ये मैराथन दौड़ते पाए जाते हैं!

प्रशान्त सोनी

प्रशान्त पिछले 15-20 वर्षों से किताबों में चित्रांकन करते आ रहे हैं। एनसीईआरटी सहित कई राज्यों की पाठ्यपुस्तकों व प्रथम, एकलव्य, इकतारा, रूम टू रीड आदि प्रकाशकों की 50 से ज़्यादा बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन कर चुके हैं। इन्होंने रियाज़ अकेडमी ऑफ इलस्ट्रेशन से एक साल का कोर्स भी किया है।

प्रशान्त को पब्लिशिंग नेक्स्ट इंडस्ट्री अवार्ड 2022, के तहत 'इलस्ट्रेटर ऑफ दि इयर' का खिताब हासिल हुआ है।

प्रशान्त उदयपुर, राजस्थान में रहते हैं। इन्हें प्रकृति के बीच रहना व ऐतिहासिक स्थान पर घूमना पसन्द है।

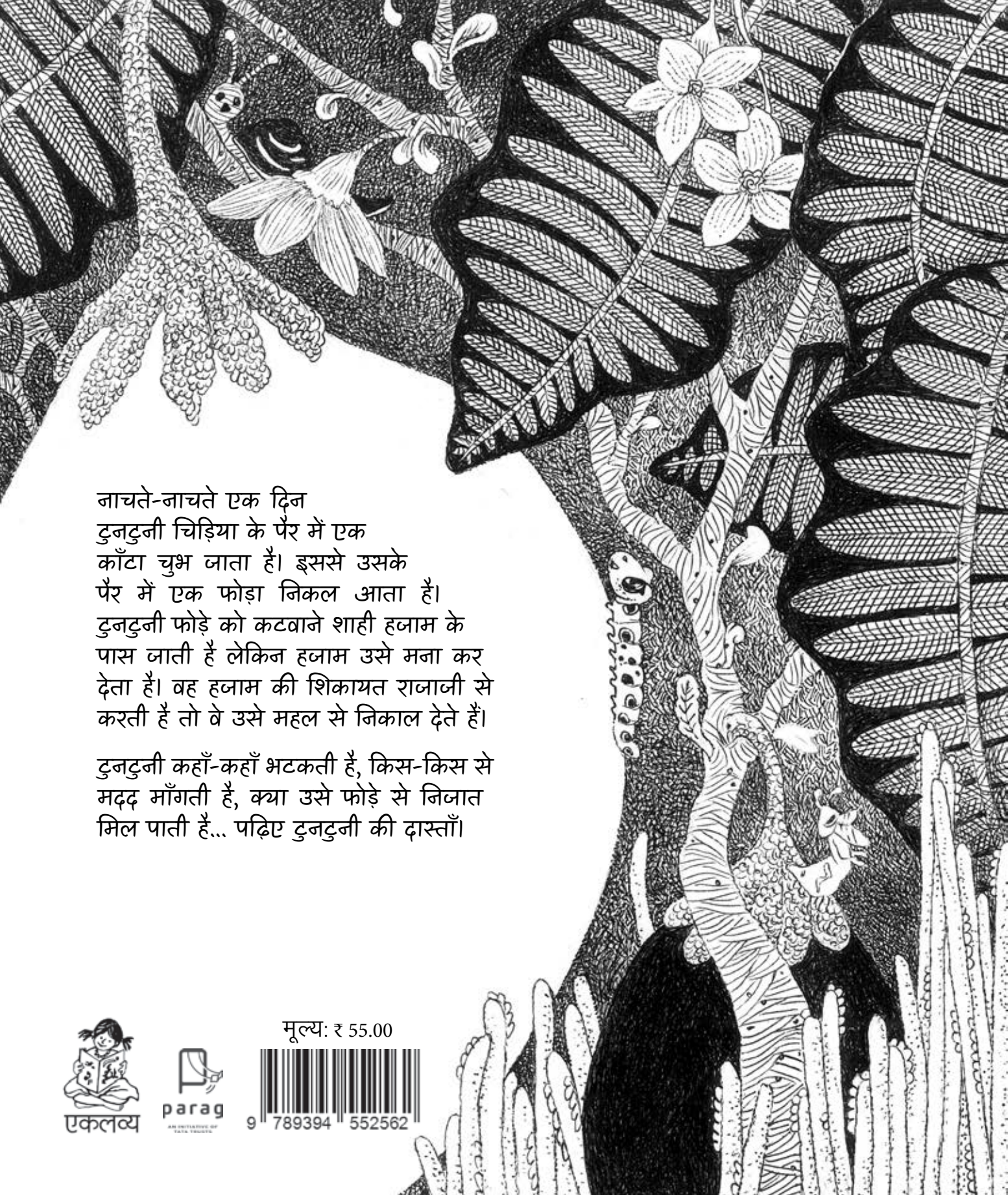

नाचते-नाचते एक दिन
टुनटुनी चिड़िया के पैर में एक
काँटा चुभ जाता है। इससे उसके
पैर में एक फोड़ा निकल आता है।
टुनटुनी फोड़े को कटवाने शाही हजाम के
पास जाती है लेकिन हजाम उसे मना कर
देता है। वह हजाम की शिकायत राजाजी से
करती है तो वे उसे महल से निकाल देते हैं।

टुनटुनी कहाँ-कहाँ भटकती है, किस-किस से
मदद माँगती है, क्या उसे फोड़े से निजात
मिल पाती है... पढ़िए टुनटुनी की दास्ताँ।

मूल्य: ₹ 55.00

एकलव्य

parag

9 789394 552562